7

रघुवंश- वसिष्णाश्रम गमन

इसके बाद इस पाठ में चौदह श्लोकों को पढ़ेंगे। दिलीप सन्तान के प्राप्ति के लिए इच्छुक थे। तदर्थ वह शास्त्रविहित अनुष्ठान करने के लिए उद्यत थे। अत: उन्होंने राज्य भार मन्त्रियों को प्रदान किया। यह हम पूर्वपाठ में पढ़ चुके। उसके बाद दिलीप सुदक्षिणा के साथ एक रथ पर आरूढ होकर सन्तान कामना के लिए वसिष्ठाश्रम की ओर गये। वशिष्ठ रघुवंश के कुल गुरू थे। जब रघुवंशीय राजाओं पर विपत्ति आती थी तब महामुनि वसिष्ठ उनको उपदेश देते थे। उपदेश पालन से वे विपत्ति मुक्त हो जाते थे। अत: दिलीप भी सन्तान कामना से वसिष्ठाश्रम के प्रति गये। कवि ने उनके गमन काल में अतीव रमणीयता से मार्ग के दोनों ओर स्थित प्राकृतिक सौन्दर्य का और रथारूढ़ दम्पति का वर्णन किया है। अन्त में उन दोनों ने सायंकाल में वशिष्ठ तपोवन में प्रवेश किया।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे :

- सुदक्षिणा और दिलीप के वसिष्ठाश्रम गमन के कारण को जान पाने में;
- कालिदास की वर्णन शैली को समक्ष पाने में;
- श्लोकों का अन्वय कर पाने में;
- समास, सन्धि आदि व्याकरण के विषयों को समझ पाने में;
- अलंकारों का समन्वय कैसे करना चाहिए, यह समझ पाने में और;
- कठिन शब्दों का अर्थ जान पाने में।

7.1 मूलपाठः-

अथाभ्यर्च्य विधातारं प्रयतौ पुत्रकाम्यया।
तौ दम्पती वसिष्ठस्य गुरोर्जग्मतुराश्रमम्।।35।।

स्निग्धगम्भीरनिर्घोषमेकं स्यन्दनमास्थितौ।
प्रावृषेण्यं पयोवाहं विद्युदैरावताविव।।36।।

मा भूदाश्रमपीडेति परिमेयपुरःसरौ।
अनुभावविशेषात्तु सेनापरिवृताविव।।37।।

सेव्यमानौ सुखस्पर्शैः शालनिर्यासगन्धिभिः।
पुष्परेणूत्किरैर्वातैराधूतवनराजिभिः।।38।।

मनोऽभिरामाः शृण्वन्तौ रथनेमिस्वनोन्मुखैः।
षड्जसंवादिनीः केका द्विध भिन्नाः शिखण्डिभिः।।39।।

परस्पराक्षिसादृश्यमदूरोज्झितवर्त्मसु।
मृगद्वन्द्वेषु पश्यन्तौ स्यन्दनाबद्धदृष्टिषु।।40।।

श्रेणीबन्धाद्वितन्वद्भिरस्तम्भां तोरणस्रजम्।
सारसैः कलनिह्रदैः क्वचिदुन्नमिताननौ।।41।।

पवनस्यानुकूलत्वात्प्रार्थनासिद्धिशंसिनः।
रजोभिस्तुरगोत्कीर्णैरस्पृष्टालकवेष्टनौ।।42।।

सरसीष्वरविन्दानां वीचिविक्षोभशीतलं।
आमोदमुपजिघ्रन्तौ स्वनिःश्वासानुकारिणम्।।43।।

ग्रामेष्वात्मविसृष्टेषु यूपचिह्नेषु यज्वनाम्।
अमोघाः प्रतिगृह्णन्तावर्घ्यानुपदमाशिषः।।44।।

हैयङ्वीनमादाय घोषवृद्धानुपस्थितान्।
नामधेयानि पृच्छन्तौ वन्यानां मार्गशाखिनाम्।।45।।

काप्यभिख्या तयोरासीद् व्रजतोः शुद्धवेषयोः।
हिमनिर्मुक्तयोर्योगे चित्राचन्द्रमसोरिव।।46।।

तत्तद्भूमिपतिः पत्न्यै दर्शयन्प्रियदर्शनः।
अपि लंघिगतमध्वानं बुबुधे न बुधोपमः।।47।।

स दुष्प्रापयशाः प्रापदाश्रमं श्रान्तवाहनः।
सायं संयमिनस्तस्य महर्षेर्महिषीसखः।।48।।

टिप्पणी

7.2 मूलपाठ की व्याख्या

अथाभ्यर्च्य विधातारं प्रयतौ पुत्रकाम्यया।
तौ दम्पती वसिष्ठस्य गुरोर्जग्मतुराश्रमम्॥35॥

अन्वय- अथपुत्रकाम्यया तौ दम्पती (सन्तौ) विधातारम् अभ्यर्च्य गुरोः वसिष्ठस्य आश्रमं जग्मतुः।

अन्वयार्थः- अथ अनन्तरं पुत्रकाम्यया पुत्रस्य इच्छया तौ सुदक्षिणादिलीपौ दम्पती जायापती प्रयतौ पवित्रौ सन्तौ विधातारं ब्रह्माणम् अभ्यर्च्य पूजयित्वा गुरोः कुलगुरोः वसिष्ठस्य महर्षेः आश्रमं तपोवनं जग्मतुः गतौ।

सरलार्थः- तदनन्तर सुदक्षिणा और दिलीप को पुत्र प्राप्ति की इच्छा प्रेरित हुई। अतः दोनों जगत्स्रष्टा ब्रह्मा की पूजा करके कुलगुरु वसिष्ठ के आश्रम में गये।

तात्पर्यार्थः- इसके बाद दिलीप ने ब्रह्मा की पूजा की। उसके बाद वह अपनी पत्नी सुदक्षिणा के साथ कुलगुरु वसिष्ठ के आश्रम की ओर गये। वसिष्ठ रघुवंश के कुलगुरु थे। प्रकृत गुरु वह होता है जो शिष्य को विपत्ति के समय यथोचित मार्ग प्रदर्शित करता है।

दिलीप का अपने गुरु वसिष्ठ में असीम विश्वास था। अतः सन्तान प्राप्ति के प्रति जितने भी प्रतिबन्धक हैं, उनका निराकरण करवाने के लिए वसिष्ठ के समीप गये। क्योंकि वे विश्वस्त थे कि वसिष्ठ उसके लिए अवश्य कोई उपदेश देंगे। उसके उपदेश से संतान निर्बाध होगा। अतः दिलीप सन्तान प्राप्ति की कामना से वसिष्ठाश्रम के प्रति गये।

व्याकरण विमर्श-

- अभ्यर्च्य- अभिपूर्वकात् अर्च्-धातोः ल्यप्प्रत्यये अभ्यर्च्य इति रूपम्।
- विधातारम्- विदधाति इति विधाता भवलि। विधातृशब्दस्य प्रथमाद्विवचने विधातारम् इति रूपं भवति।
- पुत्रकाम्यया- आत्मनः पुत्रेच्छा पुत्रकाम्या, तया पुत्रकाम्यया। अत्र काम्यच्प्रत्ययः विहितः अस्ति।
- दम्पती-जाया च पतिः च इति विग्रहे समासे कृते दम्पती इति रूपम्। अत्र एकशेषसमासः भवति। इदं नित्यद्विवचनान्तम्।
- जग्मतु-गमनार्थकस्य गम्-धतोः लिटि प्रथमपुरुषद्विवचने जग्मतुः इति रूपम्। गतवन्तौ इत्यर्थः।

सन्धिकार्य-

- अथाभ्यर्च्यः- अथ + अभ्यर्च्य

- गुरोर्जग्मतुराश्रमम्- गुरोः + जग्मतुः + आश्रमम्
- प्रयोगपरिवर्तनम्:- अथ पुत्रकाम्यया ताभ्यां दम्पतिभ्यां प्रयताभ्यां विधातारम् अभ्यर्च्य गुरोः वसिष्ठस्य आश्रमः जग्मे।

पाठगतप्रश्न-7.1

1. सुदक्षिण और दिलीप क्यों वसिष्ठाश्रम में गये?
2. दम्पति शब्द को सिद्ध कीजिए।
3. वशिष्ठ दिलीप के कौन थे?
4. वह दम्पति किसकी अर्चना करके वशिष्ठाश्रम में गये?

   (1) विष्णु, (2) शिव, (3) सूर्य, (4) ब्रह्मा
5. वह दम्पति किस मुनि के आश्रम में गये।

   (1) वसिष्ठ के, (2) विश्वामित्र के, (3) दुर्वासा के, (4) कण्वके।

7.3 मूलपाठ की व्याख्या

स्निग्धगम्भीरनिर्घोषमेकं स्यन्दनमास्थितौ।
प्रावृषेण्यं पयोवाहं विद्युदैरावताविव॥ 36॥

अन्वयः-स्निग्धगम्भीरनिर्घोषम् एकं स्यन्दनं प्रावृषेण्यं पयोवाहं विद्युदैरावतौ इव आस्थितौ (तौ दम्पती गुरोः वसिष्ठस्य आश्रमं जग्मतुः)।

अन्वयार्थः-स्निग्धगभीरनिर्घोषं मधुरगम्भीरशब्दम् एकं स्यन्दनम् एकं रथं प्रावृषेण्यं वर्षाकालजातं पयोवाहं मेघं विद्यदैरावतौ तडिदैरावतौ इव आस्थितौ आरूढौ (तौ दम्पती गुरोः वसिष्ठस्य आश्रमं जग्मतुः)।

सरलार्थः-मधुर और गम्भीर शब्द करने वाले रथ पर आरूढ होकर सुदक्षिणा और दिलीप गये। जैसे वर्षा काल में विद्युत और ऐरावत हाथी बादल पर आश्रित होते हैं।

तात्पर्यार्थः-दिलीप भार्या सुदक्षिणा के साथ रथ से वसिष्ठाश्रम को गये। जिस रथ से वे दोनों गये थे, वह रथ मधुर तथा गम्भीर ध्वनि वाले शब्दों से युक्त था। वर्षाकाल में इन्द्र का हाथी ऐरावत और बिजली बादल पर स्थित होते हैं। उसमें ऐरावत का मेघारोहण संभव है, और विद्युत भी मेघ पर ही होती है। अतः ऐरावत का विद्युत साहचर्य उचित ही है। यहां कवि ने दिलीप की ऐरावत से उपमा की, सुदक्षिणा की विद्युत से उपमा की। दोनों एक ही रथ पर साथ आरुद्ध थे। इस प्रकार जैसे ऐरावत मेघारुढ होकर विद्युत साहचर्य को प्राप्त करता है। वैसे ही दिलीप भी एक रथ पर आरुढ होकर सुदक्षिणा साहचर्य को प्राप्त है। क्योंकि वे दोनो एक ही रथ पर

टिप्पणी

आरुढ थे। इससे उस दम्पति की समान मानसिकता सूचित होती है। जिससे उनको सन्तान लाभ होगा। यह स्पष्ट होता है।

व्याकरणविमर्श-

- स्निग्धगम्भीरनिर्घोषम्- स्निग्धः गम्भीरः निर्घोषः यस्य स स्निग्धगम्भीरनिर्घोषः इति बहुव्रीहिसमासः, तं स्निग्धगम्भीरनिर्घोषम्।
- आस्थितौ- आङ्पूर्वकात् स्थाधतोः क्तप्रत्यये प्रथमाद्विचने आस्थितौ इति रूपम्।
- प्रावृषेण्यम्- प्रावृषि भवः प्रावृषेण्यः, तं प्रावृषेण्यम्। वर्षर्तौ जातम् इत्यर्थः।
- विद्युदैरावतौ- विद्युत च ऐरावतः च विद्युदैरावतौ इति इतरेतरयोगद्वन्द्वसमासः।

सन्धिकार्य -

- स्निग्धगम्भीरनिर्घोषमेकम्:- स्निग्धगम्भीरनिर्घोषम् + एकम्
- स्यन्दनमास्थितौ:- स्यन्दनम् + आस्थितौ
- विद्युदैरावताविव:- विद्युदैरावतौ-इव
- प्रयोगपरिवर्तनम्:-स्निग्धगम्भीरनिर्घोषम् एकं स्यन्दनं प्रावृषेण्यं पयोवाहं विद्युदैरावताभ्याम् इव आस्थिताभ्यां (ताभ्यां दम्पतीभ्यां गुरोः वसिष्ठस्य आश्रमः जग्मे)।

अलंकारालोचना - यहाँ रथ मेघ से उपमित है, दिलीप इन्द्रगज ऐरावत से और सुदक्षिणा विद्युत से उपमित है। इस प्रकार यहाँ तीन उपमेय वाचक शब्द है। और तीन ही उपमान वाचक शब्द है। 'इव' उपमावाचक शब्द है। जैसे ऐरावत मेघ पर आरुढ़ विद्युत्साहचर्य को प्राप्त है वैसे दिलीप रथ पर आरुढ सुदक्षिणा साहचर्य को प्राप्त है यह सादृश्य है। अतः यहाँ उपमा अलंकार है।

पाठगतप्रश्न-7.2

6. दिलीप का रथ कैसा था?
7. सुदक्षिणा और दिलीप किससे उपमित है?
8. प्रावृषेण्याशब्दं को सिद्ध कीजिए।
9. प्रावृट नाम की कौन सी ऋतु है।

   (1) ग्रीष्म ऋतुः, (2) वर्षा ऋतु, (3) बसंत ऋतु, (4) शरद ऋतु

7.4 मूलपाठ की व्याख्या

मा भूदाश्रमपीडेति परिमेयपुरःसरौ।
अनुभावविशेषात्तु सेनापरिवृताविव॥ 37॥

अन्वयः- आश्रमपीडा मा भूत् इति परिमेयपुरःसरौ अनुभावविशेषात् तु सेनापरिवृतौ इव (तौ दम्पति गुरोः वसिष्ठस्य आश्रमं जग्मतुः)।

अन्वयार्थः- आश्रमपीडा तपोवनक्लेशः मा भूत् न अस्तु इति अतः परिमेयपुरःसरौ अल्पपरिचारकसहितौ अनुभावविशेषात् तेजोविशेषात् तु सेनापरिवृतौ इव अनीकपरिवेष्टितौ इव (तौ दम्पती गुरोः वसिष्ठस्य आश्रमं जग्मतुः)।

सरलार्थः- तपोवन को क्लेश आदि नहीं हो, इस प्रकार चिन्तन करके वे दम्पति सीमित सेवक वर्ग को लेकर आश्रम में गये। किन्तु उन दोनों के तेज के प्रभाव से वे दोनों सेना से घिरे हुए से प्रतीत हो रहे थे।

तात्पर्यार्थः- दिलीप समग्र धरातल के पति थे। इस कारण से वे कहीं पर भी जाते थे तो सेना से घिरे होकर ही जाते थे। किन्तु जब वे पुत्र लाभ के लिए अपनी पत्नी सुदक्षिणा के साथ वसिष्ठाश्रम में गये तब अल्प सेना से घिरे हुए थे। क्योंकि मुनियों के आश्रम शान्त व कोलाहल शून्य होता है। वहाँ यदि दिलीप अधिक सैन्य को स्वीकार करके जाते तो आश्रम की शान्ति भंग होती। ये सब चिन्तन करके दिलीप अधिक सेना नहीं ले गये। किन्तु उन दोनों के मध्य में असामान्य तेज था। जब दोनों गये तब उनके साथ अल्प सैनिक थे। किन्तु तेज के कारण वे दोनों बहु सेना से घिरे हुए थे ऐसा प्रतीत हो रहा था। इस प्रकार प्रस्तुत श्लोक में सुदक्षिणा और दिलीप के तेज के प्रभाव का वर्णन कवि ने किया है।

व्याकरण विमर्श :-

- आश्रमपीडाः-आश्रमस्य पीडा आश्रमपीडा इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः।
- परिमेयपुरःसरौः-परिमेयाः पुरःसराः ययोः तौ परिमेयपुरःसरौ इति बहुव्रीहिसमासः।
- अनुभावविशेषात्ः- अनुभावस्य विशेषः अनुभावविशेषः इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः, तस्मात् अनुभावविशेषात्।
- सेनापरिवृतौः- सेनया परिवृतौ सेनापरिवृतौ इति तृतीयातत्पुरुषसमासः।
- मा भूत्ः- मा भूत् इत्यस्य मा अभूत् इत्येव प्रकृतं स्वरूपम्। अत्र माङ्योगे इति सूत्रेणअडागमः न भवति। मा अस्तु इत्यर्थः।

सन्धिकार्यम् :-

- भूदाश्रमपीडेतिः-भूत्+आश्रमपीडा+इति
- अनुभावविशेषात्तुः-अनुभावविशेषाद्+तु
- सेनापरिवृताविवः-सेनापरिवृतौ+इव

टिप्पणी

प्रयोगपरिवर्तनम्- आश्रमपीडया मा भूयत इति परिमेयपुरः सराभ्याम् अनुभावविशेषात् तु सेनापरिवृताभ्याम् इव (ताभ्यां दम्पतीभ्यां गुरोः वसिष्ठस्य आश्रमः जग्मे)।

पाठगतप्रश्न-7.3

10. सुदक्षिणा और दिलीप कहाँ सेना से घिरे हुए से थे?

11. मा भूत् यह प्रयोग कैसे सिद्ध होता है?

12. वे दोनों कैसे परिमेयपुरः सरौः थे?

7.5 मूलपाठ की व्याख्या

सेव्यमानौ सुखस्पर्शैः शालनिर्यासगन्धिभिः।
पुष्परेणूत्किरैर्वातैराधूतवनराजिभिः॥ 38॥

अन्वय- सुखस्पर्शैः शालनिर्यासगन्धिभिः पुष्परेणूत्किरैः आधूतवनराजिभिः वातैः सेव्यमानौ (तौ दम्पती गुरोः वसिष्ठस्य आश्रमं जग्मतुः)।

अन्वयार्थ- सुखस्पर्शैः आनन्दजनकस्पर्शैः शालनिर्यासगन्धिभिः शालवृक्षजन्यगन्धयुक्तैः पुष्परेणूत्किरैः पुष्परेणुविक्षेपकैः आधूतवनराजिभिः वातैः पवनैः सेव्यमानौ परिचर्यमाणौ (तौ दम्पती गुरोः वसिष्ठस्य आश्रमं जग्मतुः।

सरलार्थ- दिलीप और सुदक्षिणा जब रथ से वसिष्ठ आश्रम की ओर जा रहे थे, तब मार्ग में वायु ने दोनों की सेवा की। वह वायु शालवृक्ष से उत्पन्न गन्ध से युक्त, पुष्परेणु को उड़ाने वाली वायु जंगली वृक्षों को कम्पन करवा रही थी।

तात्पर्यार्थः- दिलीप पुत्र प्राप्ति के लिए उत्कण्ठित थे। अतः वे पुत्र लाभ के लिए वसिष्ठाश्रम के प्रति रथ से गये। कवि दिलीप पत्नी के साथ तपोवन को जा रहे थे, तब मार्ग में स्थित वायु का वर्णन करते हैं। शालवृक्ष के रस से एक विशिष्ट गन्ध निष्पन्न होती है। पवन उस गन्ध से युक्त थी। पुष्पों मे रेणु होती है। वह वायु उस रेणु को इधर-उधर बिखेरती है, और भी वायु अतीव तीव्र वेग से बह रही थी अतः उस वायु द्वारा वन में स्थित वृक्ष भी काँप रहे थे। इस प्रकार मनोरम पवन से वे दम्पति सेवित हो रहे थे। माना जाता है कि स्वयं अरण्यपति ने ही उस वायु से वनमार्ग मे जाते हुए सुदक्षिणा और दिलीप की सेवा की।

व्याकरणविमर्श-

- **सेव्यमानौ**- सेव्धतोः कर्मणि शानच्प्रत्यये प्रथमाद्विवचने सेव्यमानौ इति रूपम्।
- **सुखस्पर्शैः**- सुखः स्पर्शः येषां ते सुखस्पर्शाः इति बहुव्रीहिसमासः, तैः सुखस्पर्शैः। इदं तृतीयाबहुवचनान्तं पदम्।

- **शालनिर्यासगन्धिभि** - शालस्य निर्यासः शालनिर्यासः इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः। षलनिर्यासस्य गन्धः शालनिर्यासगन्धः इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः। शालनिर्यासगन्धः अस्ति येषां ते शलनिर्यासगन्धिनः, तैः शलनिर्यासगन्धिभिः।
- **पुष्परेणूत्किरै**- पुष्पाणां रेणवः पुष्परेणवः इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः। उत्किरन्ति इति उत्कीराः। पुष्परेणूनाम् उत्किराः पुष्परेणूत्किराः इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः, तैः पुष्परेणूत्किरैः।
- **आधूतवनराजिभि** - ईषत् धूता इत्यर्थे आधूता इति रूपं भवति। आधूता वनराजिः यैः ते आधूतवनराजयः इति बहुव्रीहिसमासः, तैः आधूतवनराजिभिः।

सन्धिकार्य -

- **पुष्परेणूत्किरैर्वातैराधूतवनराजिभि**- पुष्परेणूत्किरैः+वातैः+आधूतवनराजिभिः
- **प्रयोगपरिवर्तनम्**-सुखस्पर्शैः शालनिर्यासगन्धिभिः पुष्परेणूत्किरैः आधूतवनराजिभिः वातैः सेव्यमानाभ्यां (ताभ्यां दम्पतीभ्यां गुरोः वसिष्ठस्य आश्रमः जग्मे)।

पाठगतप्रश्न-7.4

13. किस प्रकार वायु ने दोनों की सेवा की?
14. शालनिर्यासगन्धिभिः पद को सिद्ध कीजिए।
15. पुष्परेणुत्किरैवर्तिराधूतवनराजिभिः का सन्धि विच्छेद कीजिए।
16. इनमें से वायु का विशेषण नहीं है।

    (1)सुखस्पर्शैः, (2)शालनिर्यासगन्धिभिः,(3)वृक्षरेणुत्किरैः,(4)आधूताख्याराजिभिः
17. सेव्यमानौ सेव् धतु और किस प्रत्यय से बना है–

    (1) शानच्प्रव्यय, (2) कानच्प्रत्यय, (3) चानशप्रत्यय, (4) अन्यः कोपि

7.6 मूलपाठ को समझते हैं।

मनोऽभिरामाः श्रृण्वन्तौ रथनेमिस्वनोन्मुखैः।
षड्जसंवादिनीः केका द्विध भिन्नाः शिखण्डिभिः॥ 39॥

अन्वय- रथनेमिस्वनोन्मुखैः शिखण्डिभिः द्विधः भिन्नाः षड्जसंवादिनीः मनोभिरामाः केकाः श्रृण्वन्तौ (तौ दम्पती गुरोः वसिष्ठस्य आश्रमं जग्मतुः)।

अन्वयार्थ- रथनेमिस्वनोन्मुखैः स्यन्दनजन्यशब्देन ऊर्ध्वमुखैः शिखण्डिभिः मयूरैः द्विधाः द्विविधाः भिन्नाः भेदयुक्ताः षड्जसंवादिनीः षड्जस्वरेण संवदतीः मनोभिरामाः चित्तप्रियाः केकाः मयूरवाणीः श्रृण्वन्तौ आकार्णयन्तौ (तौ दम्पती गुरोः वसिष्ठस्य आश्रमं जग्मतुः)।

टिप्पणी

सरलार्थ- जब सुदक्षिणा और दिलीप रथ से वन के मध्य में जा रहे थे, तब रथ के चक्र से उत्पन्न शब्द को सुनकर मयूर मुख को ऊपर कर रहे थे और वे षड्ज स्वर से मधुर ध्वनि भी कर रहे थे। ये सब सुनकर दोनों दम्पति वसिष्ठाश्रम को जा रहे थे।

तात्पर्यार्थ- सुदक्षिणा और दिलीप का रथ वनमार्ग से गया था। उनके रथ से गम्भीर ध्वनि निकल रही थी। उसी समय मार्ग के पास में कुछ मयूर थे, वे मयूर यह मेघ ध्वनि है, ऐसा सोच रहे थे। मेघ ध्वनि को करते है, तो अवश्य वर्षा होगी इस ऐसा चिन्तन करके वर्षा काल में मयूर नाचते व गाते हैं। यहाँ भी वन के मयूरों ने मेघ ध्वनि को सुनकर नृत्य गीत आदि करना शुरू कर दिया। इस श्लोक में वे मयूर षड्ज स्वर से युक्त थे ऐसा वर्णन कालिदास करते हैं। षड्ज ध्वनि शुद्ध और विकृत भेद से दो प्रकार की होती है। यहां भी मयूरों की ध्वनि भी शुद्ध और विकृत दो प्रकार की थी। वह केकारव/कलरव दोनों के मन को आह्लादित कर रहा था। इस प्रकार मनोरम केका धुन सुन कर दोनों सुदक्षिणा और दिलीप वसिष्ठाश्रम को गये।

व्याकरणविमर्श-

- मनोभिरामाः-मनसः अभिरामाः मनोभिरामाः इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः। इदं द्वितीयाबहुवचनान्तं रूपम्।
- श्रृण्वन्तौः-श्रुधातोः शतृप्रत्यये प्रथमाद्विवचने श्रृण्वन्तौ इति रूपम्।
- रथनेमिस्वनोन्मुखैः- रथस्य नेमयः रथनेमयः इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः। रथनेमीनां स्वनाः रथनेमिस्वनाः इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः। ऊर्ध्वं मुखं येषां ते उन्मुखाः इति बहुव्रीहिसमासः। रथनेमिस्वनैः उन्मुखाः रथनेमिस्वनोन्मुखाः इति तृतीयातत्पुरुषसमासः, तैः रथनेमिस्वनोन्मुखैः।
- षड्जसंवादिनीः- षड्भ्यः जायते इति षड्जः। षड्जेन संवदन्ति इति षड्जसंवादिन्यः, ताः षड्जसंवादिनीः। इदं द्वितीयाबहुवचनान्तं पदम्।

पाठगतप्रश्न-7.5

18. मयूर किस स्वर से गा रहे थे?
19. वे कैसे मुख को ऊपर कर रहे थे?
20. रथनेमिस्वनोन्मुखैः- का विग्रह और समास लिखिए।
21. मयूर किस स्वर से केकारव करते हैं?

    (1) षड्जस्वरेण, (2) मध्यमस्वरेण, (3) पञ्चमस्वरेण, (4) सप्तस्वरेण

22. ध्वनि कितने प्रकार की होती है?

    (1) तीन, (2) चार, (3) पांच, (4) दो

टिप्पणी

7.7 मूलपाठ की व्याख्या

परस्पराक्षिसादृश्यमदूरोज्झितवर्त्मसु।
मृगद्वन्द्वेषु पश्यन्तौ स्यन्दनाबद्धदृष्टिषु॥ 40॥

अन्वय- अदूरेज्झितवर्त्मसु स्यन्दनाबद्धदृष्टिषु मृगद्वन्द्वेषु परस्पराक्षिसादृश्यं पश्यन्तौ (तौ दम्पती गुरोः वसिष्ठस्य आश्रमं जग्मतुः)।

अन्वयार्थ - अदूरोज्झितवर्त्मसु समीपात् त्यक्तमार्गेषु स्यन्दनाबद्धदृष्टिषु रथे आबद्धदृष्टिषु मृगद्वन्द्वेषु हरिणयुगलेषु परस्पराक्षिसादृश्यम् परस्परनयनसमानतां पश्यन्तौ अवलोकयन्तौ (तौ दम्पती गुरोः वसिष्ठस्य आश्रमं जग्मतुः)

सरलार्थ- जब वन मार्ग में सुदक्षिणा और दिलीप का रथ जा रहा था तब मार्ग में स्थित मृग उस रथ को देख रहे थे। रथ जब समीप आ गया, तब ही मार्ग को छोड़ रहे थे। दोनों ने उन मृगद्वन्दों में परस्पर नेत्र सादृश्य को देखा।

तात्पर्यार्थ- सुदक्षिणा और दिलीप दोनों पुत्र लाभ के लिए वन मार्ग से वसिष्ठ के आश्रम को गये। वनमार्ग में प्रायः मृग विचरण कर रहे थे। जब उनका रथ आ गया तब भी मृग मार्ग के मध्य में ही थे। किन्तु रथ को देखकर भी वे मृग मार्ग को नहीं छोड़ रहे थे। जब रथ उनके समीप आ गया तब ही वे मार्ग को छोड़ रहे थे। इससे ज्ञात होता है कि उन हिरणों का मनुष्यों में विश्वास था। क्योंकि वनमार्ग में प्रायः रथ नहीं आते हैं। अतः रथागम विशेष के कारण वे रथ को देख रहे थे। इस प्रकार के मृगयुगलों में राजा रानी ने परस्पर नेत्रसादृश्य को देखा। अर्थात दिलीप ने मृगों से सुदक्षिणा के नेत्रसादृश्य को देखा। सुदक्षिणा ने भी मृगों में दिलीप के नेत्रसादृश्य को देखा।

व्याकरण विमर्श -

- **परस्पराक्षिसादृश्यम्**:- अक्ष्णोः सादृश्यम् अक्षिसादृश्यम् इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः। परस्परम् च तत् अक्षिसादृश्यम् परस्पराक्षिसादृश्यम् इति कर्मधारयसमासः। इदं द्वितीयैकवचनान्तं रूपम्।
- **अदूरोज्झितवर्त्मसु**:-न दूरम् अदूरम् इति नञतत्पुरुषसमासः। उज्झितं वर्त्म यैः तानि उज्झितवर्त्मानि इति बहुव्रीहिसमासः। अदूरं यथा तथा उज्झितवर्त्मानि अदूरोज्झितवर्त्मानि इति सुप्सुपासमासः तेषु अदूरोज्झितवर्त्मसु।
- **मृगद्वन्द्वेषु**:- मृगाणां द्वन्द्वानि मृगद्वन्द्वानि इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः, तेषु मृगद्वन्द्वेषु।
- **पश्यन्तौ**-दृश्-धतोः-शतृप्रत्यये प्रथमाद्विवचने पश्यन्तौ इति रूपम्।
- **स्यन्दनाबद्धदृष्टिषु**:-आबद्धा दृष्टिः यैः तानि आबद्धदृष्टीनि इति बहुव्रीहिसमासः। स्यन्दने आबद्धदृष्टीनि स्यन्दनाबद्धदृष्टीनि इति सप्तमीतत्पुरुषसमासः तेषु स्यन्दनाबद्धदृष्टिषु।

टिप्पणी

सन्धिकार्यम्-

- **परस्पराक्षसादृश्यमदूरोज्झितवर्त्मसुः**-परस्पराक्षिसादृश्यम्+अदूरोज्झितवर्त्मसु
- **प्रयोगपरिवर्तनम्**-अदूरोज्झितवर्त्मसु स्यन्दनाबद्धदृष्टिषु मृगद्वन्द्वेषु परस्पराक्षिसादृश्यं पश्यद्भ्यां (ताभ्यां दम्पतीभ्यां गुरोः वसिष्ठस्य आश्रमः जग्मे)।

पाठगत प्रश्न-7.6

23. मृग कैसे मार्ग का परित्याग कर रहे थे?
24. उन दोनों ने परस्पर लोचन सादृश्य को कहाँ देखा?
25. ''अदूरोज्झितवर्त्मसु'' का विग्रह और समास लिखिए।
26. सुदक्षिणा और दिलीप ने मृगद्वन्द्वों में क्या देखा?

    (1) प्रेमप्राचुर्यय, (2) मित्रता, (3) नेत्रसादृश्य, (4) मुखसादृश्य।

7.8 मूलपाठ की व्याख्या

श्रेणीबन्धाद् वितन्वद्भिरस्तम्भां तोरणस्रजम्।
सारसैः कलनिह्रदिः क्वचिदुन्नमिताननौ॥41॥

अन्वय- श्रेणीबन्धात् अस्तम्भां तोरणस्रजं वितन्वद्भिः कलनिह्रदिः सारसैः क्वचित् उन्नमिताननौ (तौ दम्पती गुरोः वसिष्ठस्य आश्रमं जग्मतुः)।

अन्वयार्थ- श्रेणीबन्धत् पङ्क्तबन्धात् अस्तम्भां स्तम्भरहितां तोरणस्रजं बहिर्द्वरि स्थितां पुष्पमालां वितन्वद्भिः कुर्वद्भिः कलनिद्वदिः मधुरध्वनिना सारसैः तन्नामकैः पक्षिभिः क्वचित् कुत्रचित् उन्नमिताननौ ऊर्ध्वीकृतमुखौ (तौ दम्पती गुरोः वसिष्ठस्य आश्रमं जग्मतुः)।

सरलार्थ- जब दिलीप और सुदक्षिणा वनमार्ग से जा रहे थे तब आकाश में मधुरध्वनि को करते हुए सारसों ने आकाश में स्तम्भरहित तोरणमाला बनायी। उस माला को देख देखकर ऊपर मुख किये हुए दोनों दम्पति वशिष्ठ तपोवन गये।

तात्पर्यार्थ- कोई भी सम्मानीय जन घर की ओर आते हैं, तो गृहस्थ जन द्वार के बाहर द्वार पर पुष्पमाला स्थापित करते हैं। इसमें आये हुए जन की अभ्यर्चना की जाती है दिलीप और सुदक्षिणा पुत्रप्राप्ति की कामना से तपोवन गये। अतः आये हुए दम्पति के लिए आकाश में सारस पक्षियों ने तोरण माला का निर्माण किया। किन्तु यह माला सामान्य नहीं है। क्योंकि सामान्य माला किसी स्तम्भ के आधार पर होती है। सारसों द्वारा बनायी गई माला का आकाश में कोई स्तम्भ नहीं था। अतएव''अस्तम्भा तोरण स्रक''यह कवि ने वर्णन किया है उन सारसों की ध्वनि भी सुमधुर थी। इस सुमधुर ध्वनि को सुन-सुनकर और आकाश में सारस पक्षियों की मनोरम माला को देख-देखकर दिलीप और सुदक्षिणा तपोवन को गये।

व्याकरण विमर्श -

- **श्रेणीबन्धत्:**-श्रेण्या: बन्ध: श्रेणीबन्ध: इति षष्ठीतत्पुरुषसमास:, तस्मात् श्रेणीबन्धत्।
- **वितन्वद्भि:**- विपूर्वकात् तन्-धातो: शतृप्रत्यये वितन्वत् इति प्रातिपदिकं निष्पद्यते। तस्य तृतीयाबहुवचने वितन्वद्भि: इति रूपम्।
- **अस्तम्भाम्:**- अविद्यमान: स्तम्भ: यस्या: सा अस्तम्भा इति नञ्बहुव्रीहिसमास:, ताम् अस्तम्भाम्।
- **तोरणास्रजम्:**- तोरणे स्रक् तोरणास्रक् इति सप्तमीतत्पुरुषसमास:, तां तोरणस्रजम्। तोरणं नाम बहिर्द्वारम्।
- **कलनिह्लद:**- कल: निर्ह्लाद: येषां ते कलनिर्ह्लादा: इतिबहुव्रीहिसमास:, तै: कलनिह्लदि:।
- **उन्नमिताननौ:**- उत्पूर्वकात् नम्-धतो: णिचि क्तप्रत्यये उन्नमितम् इति रूपम्। उन्नमितम् आननं ययो: तौ उन्नमिताननौ इति बहुव्रीहिसमास:।

सन्धिकार्यम् -

- **वितन्वद्भिरस्तम्भाम्**-वितन्वद्भि:+अस्तम्भाम्
- **क्वचिदुन्नमिताननौ**-क्वचित्+उन्नमिताननौ
- **प्रयोगपरिवर्तनम्**-श्रेणीबन्धत् अस्तभां तोरणस्रजं वितन्वद्भि: कलनिर्ह्लादै: सारसै: क्वचित् उन्नमिताननाभ्यां (ताभ्यां दम्पतीभ्यां गुरो: वसिष्ठस्य आश्रम: जग्मे)।

पाठगत प्रश्न-7.7

27. सारसों ने कैसे तोरण स्रक बनायी?
28. तोरण स्रक कैसी थी?
29. उन्नमिताननौ'' को स्पष्ट कीजिए।

7.9 मूलपाठ की व्याख्या

पवनस्यानुकूलत्वात् प्रार्थनासिद्धिशंसिन:।
रजोभिस्तुरगोत्कीर्णैरस्पृष्टालकवेष्टनौ॥ 42।

अन्वय- प्रार्थनासिद्धिशंसिन: पवनस्य अनुकूलत्वात् तुरगोत्कीर्णै: रजोभि: अस्पृष्टालकवेष्टनौ (तौ दम्पती गुरो: वसिष्ठस्य आश्रमं जग्मतु:)।

टिप्पणी

अन्वयार्थः-प्रार्थनासिद्धिशंसिनः मनोरथसाफल्यसूचकस्य पवनस्य वायोः अनुकूलत्वात् आनुकूल्यात् तुरगोत्कीर्णैः अश्वखुरेण उक्षिप्तैः रजोभिः धूलिभिः अस्पृष्टालकवेष्टनौ अस्पृष्टौ केशोष्णीषौ ययोः (तौ दम्पती गुरोः वसिष्ठस्य आश्रमं जग्मतुः)।

सरलार्थः-सुदक्षिणा और दिलीप के गमन समय में मनोरथ सिद्धि सूचक वायु अनुकूल रूप से प्रवाहित हो रही है। अतएव घोड़ों के खुरों से उड़ाई गयी धूलि ने दिलीप के उष्णी (पगड़ी)को और सुदक्षिणा के अलक को स्पर्श नहीं किया।

तात्पर्यार्थः-महाराज दिलीप भार्या सुदक्षिणा के साथ महर्षि वशिष्ठ के तपोवन में गये थे। उनकी मनोकामना थी कि महर्षि के उपदेश से पुत्र लाभ होगा। जब दोनों रथ से जा रहे थे, तब मार्गस्थ वायु अनुकूलता से बह रही थी। अर्थात् रथ जिस दिशा में जा रहा था उसी दिशा में वायु भी प्रवाहित हो रही थी। इस प्रकार अनुकुल वायु प्रवाह उनके मनोरथ सिद्धि ज्ञापक था। यहाँ कवि का आशय है, रथ वाहक अश्वों के खुरो से धूली के कण उड़ रहे थे। किन्तु वे धूली के कण दिलीप की पगड़ी और सुदक्षिणा के अलक को स्पर्श नहीं कर रहे थे। अनुकूल पवन की सहायता से दोनों निर्मल होते हुए वशिष्ठ आश्रम को गये।

व्याकरण विमर्श-

- **अनुकूलत्वात्**:-अनुकूलस्य भावः अनुकूलत्वम्, तस्मात् अनुकूलत्वात्।
- **प्रार्थनासिद्धिशांसिनः**- प्रार्थनायाः सिद्धिः प्रार्थनासिद्धिः इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः। प्रार्थनासिद्धिं शंसति इति प्रार्थनासिद्धिशंसी, तस्य प्रार्थनासिद्धिशंसिनः।
- **तुरगोत्कीर्णैः**-तुरगैः उत्कीर्णानि तुरगोत्कीर्णानि इति तृतीयातत्पुरुषसमासः, तैःतुरगोत्कीर्णैः। इदंतृतीयाबहुवचनान्तं रुपम्।
- **अस्पृष्टालकवेष्टनौः**-न स्पृष्टानि अस्पृष्टानि इति नञ्तत्पुरुषसमासः। अलकाः च वेष्टनं च अलकवेष्टनानि इति इतरेतरद्वन्द्वसमासः। अस्पृष्टानि अलकवेष्टनानि ययोः तौ अस्पृष्टालकवेष्टनौ इति बहुव्रीहिसमासः।

सन्धिकार्य-

- **पवनस्यानुकूलत्वात्**:- पवनस्य+अनुकूलत्वात्
- **रजोभिस्तुरगोत्कीर्णैरस्पृष्टालकवेष्टनौ**-रजोभिः-तुरगोत्कीर्णैः+अस्पृष्टालकवेष्टनौ

पाठगत प्रश्न-7.8

30. पवन कैसी थी?

31. पवन ने किसी प्रकार कार्यद्वय किये?

32. रजोभिस्तुरगोत्कीर्णैरस्पृष्टालकवेष्टनौ'' का सन्धि विच्छेद कीजिए।

टिप्पणी

7.10 मूलपाठ की व्याख्या

सरसीष्वरविन्दानां वीचिविऽोभशीतलम्।
आमोदमुपजिघ्रन्तौ स्वनिः श्वासानुकारिणम्॥43॥

अन्वय- सरसीषु वीचिविक्षोभशीतलं स्वनिःश्वासानुकारिणम् अरविन्दानाम् आमोदम् उपजिघ्रन्तौ (तौ दम्पती गुरोः वसिष्ठस्य आश्रमं जग्मतुः)।

अन्वयार्थ- सरसीषु सरोवरेषु वीचिविक्षोभशीतलं तरङ्सञ्च्लेन शीतलीभूतं स्वनिःश्वासानुकारिणं निजनिःश्वासस्य अनुकरणं कुर्वन्तम् पद्मानां आमोदं सौरभम् उपजि घ्रन्तौ घ्राणेन गृहन्तौ (तौ दम्पती गुरोः वसिष्ठस्य आश्रमं जग्मतुः)।

सरलार्थ- सरोवरों में तरंग के सम्पर्क से पद्मों की सुगन्ध शीतल थी। सुदक्षिणा और दिलीप अपनी निश्वास को अनुकूल करते हुए उस सौरभ की सुगन्ध ग्रहण करते हुए वशिष्ठ आश्रम को चले।

तात्पर्यार्थ- जिस वनमार्ग से सुदक्षिणा और दिलीप वशिष्ठाश्रम को गये, उस मार्ग के पास में सरोवर थे। उन सरोवरों की तरंग शीतल थी। उन सरोवरों में कमल प्रस्फुटित हो रहे थे। जब वायु सरोवर के ऊपर प्रवाहित हो रही थी तब पद्मसौरभयुक्त थी। और शीतल तरंग के सम्पर्क से वायु शीतल होती थी। गमन वेला में इस प्रकार की शीतल सुरभि और पवन की सुगन्ध ले रहे थे। वायु उन दोनों के निःश्वास का अनुकरण कर रही थी। इससे उनके निःश्वास अरविन्द से भी परिमलभरित थे। इस प्रकार प्रस्तुत श्लोक से कवि उनके निःश्वास का वर्णन करते हैं।

व्याकरण विमर्श -

- वीचिविक्षोभशीतलम्-वीचीनां विक्षोभः इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः। वीचिविक्षोभेण शीतलं वीचिविक्षोभः इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः। वीचिविक्षोभेण शीतलं वीचिविक्षोभशीतलम् इति तृतीयातत्पुरुषसमासः।
- उपजिघ्रन्तौ-उपपूर्वकात् घ्राधातोः शतृप्रत्यये प्रथमाद्विवचने उपजिघ्रन्तौ इति रूपम्।
- स्वनिःश्वासानुकारिणाम्-स्वस्य निःश्वासः स्वनिःश्वासः इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः। स्वनिःश्वासम् अनुकरोति इत्यर्थे स्वनिःश्वासानुकारी इति रूपम्, तं स्वनिःश्वासनुकारिणाम्।

सन्धिकार्यम्-

- सरसीष्वरविन्दानाम्-सरसीषु+अरविन्दानाम्
- आमोदमुपजिघ्रन्तौ-आमोदम्+उपजिघ्रन्तौ

पाठगत प्रश्न-7.9

33. अरविन्दों के परिमल कैसे शीतल हुए?

34. आमोद: ने किनको अनुक्रम किया?

35. दम्पति के नि:श्वास कैसे हैं?

टिप्पणी

7.11 मूलपाठ की व्याख्या

ग्रामेष्वात्मविसृष्टेषु यूपचिह्नेषु यज्वनाम्।
अमोघा: प्रतिगृह्णन्तावर्ध्यानुषदमाशिष:।।44।।

अन्वय- आत्मविसृष्टेषु यूपचिह्नेषु ग्रामेषु यज्वनाम् अर्ध्यानुपदम् अमोध आशिष: प्रतिगृह्णन्तौ (तौ दम्पती गुरो: वसिष्ठस्य आश्रमं जग्मतु:)।

अन्वयार्थ- आत्मविसृष्टेषु स्वदत्तेषु यूपचिह्नयुक्तेषु ग्रामेषु यज्वनां यज्ञं कुर्वतां यज्ञिकानाम् अधर्यानुपदम् अर्ध्यग्रहणानन्तरं अमोघा: सफला आशिष: आशीर्वादान् प्रतिगृह्णन्तौ स्वीकुर्वन्तौ (तौ दम्पती गुरो: वसिष्ठस्य आश्रमं जग्मतु:)।

सरलार्थ- गमन काल में ग्रामों में याज्ञिकों के सफल आशीर्वाद को दोनों ने स्वीकार किया वे ग्राम दिलीप द्वारा प्रदान किये गये यूपचिह्नयुक्त थे।

तात्पर्यार्थ- दिलीप महान् दाता थे। अत यज्ञ सम्पादन के बाद वह याज्ञिकों को सम्पूर्ण ग्राम देते थे। क्योंकि सम्पूर्ण पृथ्वी उनके अधीन थी। उन ग्रामों में यज्ञ के समय पशुबलि दी जाती थी। बलि से पूर्व पशु जिस दारु में बद्ध करके संस्थापित करते हैं उस दारु को यूपदारु कहते हैं। उन ग्रामों में प्राय: यज्ञादि होते थे अत: बहुत अधिक यूपदारु दिखाई दे रहे थे। उन ग्रामों में याज्ञिक निवास करते थे। दिलीप जा रहे हैं, ऐसा जानकर वे मार्ग के पास आ गये। वे पण्डित दम्पति को आशीर्वाद दे रहे थे। वह आशीर्वाद दिलीप और सुदक्षिणा के अभीष्ठ का साधक था। अत: वे दोनों उन आशीर्वादों को ग्रहण करके वसिष्ठाश्रम को गये।

व्याकरण विमर्श -

- **आत्मविसृष्टेषु**-आत्मना विसृष्टा: आत्मविसृष्टा: इति तृतीयातत्पुरुषसमास: तेषु आत्मविसृष्टेषु।
- **यूपचिद्वेषु**- यूपा: एवं चिद्वानि येषां ते यूपचिद्वा: इति बहुव्रीहिसमास:, तेषु यूपचिह्वेषुं।
- **यज्वनाम्**- अयजन्त इति यज्वान:, तेषां यज्वनाम्। इदं षष्ठीबहुवचनान्तं रूपम्।
- **अमोघा** - न मोघा: अमोघा: इति नञ्तत्पुरुषसमास:। इदं द्वितीयैकवचनान्तं पदम्।
- **प्रतिगृह्णन्तौ**-प्रतिपूर्वकात् ग्रह्-धातो: शतृप्रत्यये प्रथमाद्विवचने प्रतिगृह्णन्तौ इति रूपम्।

- **अधर्यानुपदम्**- अर्घाय इदम् इति अर्थे यत्प्रत्यये अर्ध्यशब्दः निष्पद्यते। पदस्य पश्चात् अनुपदम् इति अव्ययीभावसमासः। अर्ध्यस्य अनुपदम् अधर्यानुपदम् इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः।
- **अशिष**- आशिष्-शब्दस्य द्वितीयाबहुवचने आशिषः इति रूपम्।

सन्धिकार्यम्-

- **ग्रामेष्वात्मविसृष्टेषु**- ग्रामेषु+आत्मविसृष्टेषु
- **प्रतिगृह्णन्तावर्ध्यानुपदमाशिषः**- प्रतिगृह्णन्तौ+अर्ध्यानुपदम्+आशिषः

पाठगत प्रश्न-7.10

36. ग्राम किसने किसको दिये?

37. याज्ञिकों का आशीर्वाद कैसा था?

38. ''प्रतिगृहणन्ताव र्ध्यानुपदमाशिष' का सन्धि विच्छेद कीजिए।

7.12 मूलपाठ की व्याख्या

हैयंगवीनमादाय घोषवृद्धानुपस्थितान्।
नामधेयानि पृच्छन्तौ वन्यानां मार्गशाखिनाम्॥45॥

अन्वय- हैयंगवीनम् आदाय उपस्थितान् घोषवृद्धान् वन्यानां मार्गशखिनां नामधेयानि पृच्छन्तौ (तौ दम्पती गुरोः वसिष्ठस्य आश्रमं जग्मतुः)

अन्वयार्थ- हैयंगवींन ह्यस्तनेन गोदोहनेन उत्पन्नं घृतम् आदाय गृहीत्वा उपस्थितान् समीपस्थितान् घोषवृद्धान आभीरपल्लीवृद्धजनान् वन्यानाम् अरण्ये जातानां मार्गशाखिनां मार्गस्थवृक्षाणां नामधेयानि नामानि पृच्छन्तौ जिज्ञासमानौ (तौ दम्पती गुरोः वसिष्ठस्य आश्रमं जग्मतुः)।

सरलार्थ- दिलीप और सुदक्षिणा ने मार्ग में बहुत से वृक्षों को देखा, जिनका नाम वे नहीं जानते थे। जब वृद्ध जन ताजा मक्खन लेकर दिलीप के पास आये, तब दिलीप ने उन वृक्षों के नाम उन वृद्धजनों से पूछे।

तात्पर्यार्थ- मनु ने कहा है कि राजा वृद्ध जनों की सेवा करें। अतः दिलीप भी आभीर पल्ली में रहने वाले वृद्ध जनों के प्रति श्रद्धाशील थे। राजा ने वन को अतिक्रम्य करके घोष पल्ली मे प्रवेश किया। क्षितीश्वर महाराज दिलीप आ गये ऐसा देखकर घोषपल्ली में स्थित जन हैयंगवीन (ताजा मक्खन) लेकर उपस्थित हुए। हयः (कल) गोदोहन से जो दुग्ध उत्पन्न हुआ उस दुग्ध से निर्मित धृत (घी) को हैयंगवीन (ताजा मक्खन) कहते हैं। दिलीप सामने उपस्थित हुए उनको देखकर अत्यधिक प्रसन्न हुए। मार्ग में कुछ वृक्षों को देखकर जिनका

टिप्पणी

नाम वह नहीं जानते हैं। वृद्ध जन इस विषय में अधिक ज्ञान सम्पन्न थे ऐसा दिलीप ने जाना। अत: दिलीप वृक्षों के नामों को जानकर वसिष्ठाश्रम की ओर गये।

व्याकरण विमर्श -

- **आदाय:**- आङ्पूर्वकात् दाधतो: ल्यप्प्रत्यये आदाय इति रूपम्।
- **घोषवृद्धान:**- घोषे वृद्धा: घोषवृद्धा: इति सप्तमीतत्पुरुषसमास:, तान् घोषवृद्धान्।
- **उपस्थितान्:**- उपपूर्वकात् स्थाधातो: क्तप्रत्यये उपस्थित इति प्रातिपदिकं निष्पद्यते। तस्य द्वितीयाबुहवचने उपस्थितान् इति रूपम्।
- **नामधेयानि:**-नामानि एव तानि इति अर्थे नामशब्दात् धेयप्रत्यये नामधेयानि इति रूपम्। इदं द्वितीयाबहुवचनान्तं पदम्।
- **पृच्छन्तौ:**-प्रच्छ्-धातो: शतृप्रत्यये प्रथमद्विवचने पृच्छन्तौ इति रूपम्।
- **वन्यानाम्:**- वने भवा: वन्या: तेषां वन्यानाम्।
- **मार्गशाखिनाम्:**- मार्गे शाखिन: मार्गशाखिन: इति सप्तमीतत्पुरुषसमास:, तेषां मार्गशखिनाम्।

सन्धिकार्य-

- **हैयङ्गवीनमादाय:**- हैयङ्गवीनम्+आदाय
- **घोषवृद्धानुपस्थितान्:**- घोषवृद्धान्+उपस्थितान्

पाठगत प्रश्न-7.11

39. हैयंगवीन किसे कहते हैं?
40. उनको मार्गवृक्षों के नाम किसने बताये?
41. वृद्धजन क्या लेकर उपस्थित हुए?
42. सुदक्षिणा और दिलीप कहाँ आये?

    (1)ब्राह्मणग्राम, (2)जलाशल, (3) यज्ञस्थान, (4) आभीरग्राम

7.13 मूलपाठ की व्याख्या

काप्यभिख्या तयोरासीद् व्रजतो: शुद्धवेषयो:।
हिमनिर्मुक्तयोयोगे चित्राचन्द्रमसोरिव॥46॥

टिप्पणी

अन्वय- व्रजतोः शुद्धवेषयोः तयोः हिमनिर्मुक्तयोः चित्राचन्द्रमसोः इव योगे (सति) कापि अभिख्या आसीत्।

अन्वयार्थ- व्रजतोः गच्छतोः शुद्धवेषयोः पवित्रवस्त्रयोः तयोः सुदक्षिणादिलीपयोः हिमनिर्मुक्तयोः तुषाररहितयोः चित्राचन्द्रमसोः इव चित्रानामकनक्षत्रचन्द्रयोः इव योगे संयोगे सति कापि काचित् अभिख्या शोभा आसीत् अभवत्।

सरलार्थ- वशिष्ठाश्रम में जाते हुए पवित्र वस्त्रधारी सुदक्षिणा और दिलीप शोभायुक्त थे। जैसे संयोग होते हुए चित्रा नक्षत्र और चन्द्रमा शोभा युक्त होता है।

तात्पर्यार्थ- दिलीप और सुदक्षिण पवित्र वस्त्र धारण करके वशिष्ठाश्रम जा रहे थे। वहाँ जाते हुए दोनों के वर्णन के लिए कवि ने एक उपमा दी है। चैत्रमास की पूर्णिमा में चित्रा नक्षत्र चन्द्रमा से मिलता है। जब चित्रा और चन्द्रमा मिलते हैं तब वे दोनों अपूर्वशोभा युक्त दिखाई देते हैं। यहां सुदक्षिणा चित्रा नक्षत्र से और दिलीप चन्द्रमा से उपमित हैं। सुदक्षिणा और दिलीप रथ पर आरूढ़ होकर तपोवन जा रहे थे। अतः उन दोनों के संयोग से अपूर्व शोभा थी। जैसे चित्रा और चन्द्रमा को संयोग में शोभा होती है। इस प्रकार के उनके संयोग के वर्णन से सन्तान लाभ में उनकी अनुकूलता ही प्रदर्शित होती है। अर्थात् जिस कारण से वे तपोवन में जा रहे थे, वह सिद्ध होगा ऐसा मानते हैं। इस श्लोक से कालिदास को ज्योतिषशास्त्र का सम्यक् ज्ञान था, यह स्पष्ट होता है।

व्याकरण विमर्श-

- **व्रजतोः**- व्रज्-धातोः शतृप्रत्यये व्रजत् इति प्रातिपदिकं निष्पद्यते। तस्य षष्ठीद्विवचने व्रजतोः इति रूपम्। इदं षष्ठीद्विवचनान्तं पदम्।
- **शुद्धवेषयोः**-शुद्धः वेषः ययोः तौ शुद्धवेषौ इति बहुव्रीहिसमासः, तयोः, शुद्धवेषयोः।
- **हिमनिर्मुक्तयोः**- हिमात् निर्मुक्तौ हिमनिर्मुक्तौ इति पञ्चम्यीतत्पुरुषसमासः, तयोः शुद्धवेषयोः।
- **चित्राचन्द्रमसोः**- चित्रा च चन्द्रमाः च चित्राचन्द्रमसौ इति इतरेतरद्वन्द्वसमासः, तयोः चित्राचन्द्रमसोः।

सन्धिकार्य -

- **काप्यभिख्याः**- कापि+अभिख्या
- **तयोरासीद्**:- तयोः+आसीद्
- **हिमनिर्मुक्तयोर्योगे**:- हिमनिर्मुक्तयोः+योगे
- **चित्राचन्द्रमसोरिव**:-चित्राचन्द्रमसोः+इव

अलंकारालोचना- यहाँ दिलीप चन्द्रमा से, और रानी सुदक्षिणा चित्रा नक्षत्र से उपमित है, इव उपमावाचक शब्द है, जैसे चित्रा और चन्द्रमा के योग में अद्वितीय शोभा होती है। वैसी शोभा सुदक्षिणा और दिलीप के योग में थी, यह सादृश्य है अतः यहां उपमालंकार है।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न-7.12

43. चित्रा नक्षत्र और चन्द्रमा का योग कब होता है?

44. अभिख्या किसे कहते है?

45. सुदक्षिणा और दिलीप किससे उपमित है?

46. यहां दिलीप किससे उपमित है?

(1) चन्द्रमा से (2) चित्रा नक्षत्र से (3) नक्षत्र से (4) सूर्य से

47. हिमनिर्युक्तयो: में समास है–

(1) तृतीया तत्पुरुष, (2) चतुर्थी तत्पुरुष, (3) पंचमी तत्पुरुष, (4)सप्तमी तत्पुरुष

7.14 मूलपाठ की व्याख्या

तत्तद्भूमिपतिः पत्न्यै दर्शयन्प्रियदर्शनः।
अपि लंघिगतमध्वानं बुबुधे न बुधोपमः॥47॥

अन्वय- प्रियदर्शनः बुधोपमो भूमिपतिः पत्न्यै तत्तद् दर्शयन् लघिग्तम् अपि अध्वानं न बुबुधे।

अन्वयार्थ- प्रियदर्शनः अभीष्टदर्शनः बुधोपमः पण्डितसदृशः भूमिपतिः राजा दिलीपः पत्न्यै भार्यायै सुदक्षिणायै तत्तद् अद्भूतं वस्तु दर्शयन् अवलोकयन् अपि अतिवाहितम् अपि अध्वानं मार्ग न बुबुधे न ज्ञातवान्।

सरलार्थ- प्रिय दिखने वाले बुध के समान राजा दिलीप जब वशिष्ठाश्रम जा रहे थे, तब राज्य की वस्तुस्थिति कहाँ और क्या है इत्यादि सब कुछ पत्नी सुदक्षिणा को दिखा रहे थे। उससे उनको अतिक्रान्त मार्ग का भी ज्ञान नहीं था।

तात्पर्यार्थ - राजा दिलीप सुदर्शनीय पुरुष थे। अतः सभी उनको देखने की इच्छा करते थे। अतः वह प्रियदर्शन है यह कवि वर्णन करते हैं। चन्द्रमा का पुत्र बुध है। राजा दिलीप बुध ग्रह के सदृश थे। अथवा बुध का अर्थ पण्डित होता है। उससे दिलीप पण्डित थे ऐसा सूचित होता है। राजा दिलीप अपने राज्य के विषय में सब कुछ जानते थे। अत एव जब वे वशिष्ठाश्रम जा रहे थे तब राज्य में क्या कहाँ है, उन सबका सुदक्षिणा को सविस्तार वर्णन किया। इस प्रकार वर्णन करते हुए वे बहुत मार्ग को अतिक्रान्त कर गये। किन्तु वे इतनी एकाग्रता से वर्णन कर रहे थे, कि कितना मार्ग पार कर गये यह भी ज्ञात नहीं रहा। इससे दिलीप समीचीन वक्ता थे, यह ज्ञात होता है।

व्याकरण विमर्श -

- **भूमिपतिः**- भूमेः पतिः भूमिपतिः इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः।

- **दर्शयन्**:- दृश्धातोः णिच्प्रत्यये दृशिधतुः निष्पद्यते। ततः शतृप्रत्यये प्रथमैकवचने दर्शयन् इति रूपम्।
- **प्रियदर्शनः**- प्रियं दर्शनं यस्य सः प्रियदर्शनः इति बहुव्रीहिसमासः।
- **अध्वानम्**:- अध्वन्-शब्दस्य द्वितीयैकवचने अध्वानम् इति रूपम्।
- **बुबुधेः**-बुध्-धतोः लिटि प्रथमपुरुषैकवचने बुबुधे इति रूपम्।
- **बुधेपमः**- बुधः उपमा यस्य स बुधेपमः इति बहुव्रीहिसमासः।

सन्धिकार्यम् -

- **लङ्िगतमध्वानम्**-लंघिग्तम्+अध्वानम्

पाठगत प्रश्न-7.13

48. दिलीप को अतिक्रान्त मार्ग का क्यों ज्ञान नहीं रहा?

49. 'बुबुधे' में धातु व लकार बतायें।

50. बुध किसका पुत्र था?

    (1) सूर्य का, (2) भूमि का, (3) चन्द्र का, (4) शुक्र का

7.15 मूलपाठ की व्याख्या

स दुष्प्रापयशाः प्रापदाश्रमं श्रान्तवाहनः।
सायं संयमिनस्तस्य महर्षेर्महिषीसखः॥48॥

अन्वय- दुष्प्रापयशाः श्रान्तवाहनः महिषीसखः स सायं संयमिनः तस्य महर्षेः आश्रमं प्रापत्।

अन्वयार्थ- दुष्प्रापयशाः दुर्लभकीर्तिमान् श्रान्तवाहनः क्लान्तुरङगः महिषीसखः सुदक्षिणासहचरः सः दिलीपः सायं सन्ध्याकाले संयमिनः नियमं पालयतः तस्य महर्षेः वसिष्ठस्य आश्रमं तपोवनं प्रापत् प्राप्तवान्।

सरलार्थ- दुर्लभयश के अधिकारी राजा दिलीप पुत्र प्राप्ति की कामना से वशिष्ठाश्रम को गये। अन्त में वे जब सन्ध्याकाल में संयमी महर्षि वसिष्ठ के आश्रम को पहुंचे तब उसके रथवाहक अश्व भी थक गये थे।

तात्पयार्थः- यहाँ तक पूर्व में कवि ने सन्तान प्राप्ति के लिए वशिष्ठाश्रम के प्रति आगमन मार्ग में उनके द्वारा देखे गये प्राकृतिक सौन्दर्य आदि का वर्णन किया। इस प्रकार बहुत समय के बाद जब वे दोनों वसिष्ठाश्रम पहुंचे तब संध्याकाल था। मार्ग की थकान के कारण

टिप्पणी

रथवाहक अश्व भी थक गये थे। वशिष्ठ संयमी थे। संयमी ही ध्यानयोग से तीनों कालों को देखने में समर्थ होते हैं। दिलीप पुत्र लाभ के लिए तपोवन आये थे। क्योंकि दिलीप जानते थे कि कुलगुरु वशिष्ठ ध्यान योग से सन्तान प्राप्ति के प्रतिबन्धक को जानेंगे और उसके निराकरण करने का आवश्यक कोई उपाय बतायेंगे। अतएव दिलीप भार्या सुदक्षिणा के साथ वसिष्ठ के तपोवन आये।

व्याकरण विमर्श -

- **दुष्प्रापयशाः**- दुष्प्रापं यशः यस्य स दुष्प्रापयशाः इति बहुव्रीहिसमासः।
- **प्रापत्**- प्रपूर्वकात् आप्-धातोः लुङि प्रथमपुरुषैकवचने प्रापत् इति रूपम्।
- **श्रान्तवाहनः**- श्रान्तानि वाहनानि यस्य सः श्रान्तवाहनः इति बहुव्रीहिसमासः।
- **संयमिनः**- संयमः अस्ति यस्य स संयमी, तस्य संयमिनः।
- **महिषीसखः**- महिष्याः सखा महिषीसखः इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः।
- **महर्षेः**- महान् चासौ ऋषिः च महर्षिः इति कर्मधारयसमासः, तस्य महर्षेः। इदं षष्ठ्येकवचनान्तं रूपम्।

सन्धिकार्यम्-

- **प्रापदाश्रमम्**:- प्रापत्+आश्रमम्
- **संयमिनस्तस्य**:-संयमिनः+तस्य
- **महर्षेर्महिषीसख**:-महर्षेः+महिषीसखः

पाठगत प्रश्न-7.14

51. दिलीप कब वशिष्ठाश्रम पहुंचे?

52. 'महिषीसखः' का विग्रह एवं समास लिखिए।

पाठसार

उसके बाद दिलीप ब्रह्मा की पूजा करके कुलगुरु वशिष्ठ के आश्रम में रथ से गये जैसे वर्षाकाल में मेघारूढ ऐरावत विद्युत्साहचर्य को प्राप्त होते हैं वैसे ही रथारूढ दिलीप सुदक्षिणा साहचर्य को प्राप्त थे। आश्रम परिसर शान्त होता है। यदि वहाँ अधिक व्यक्ति जाते हैं तो आश्रम में शान्ति भंग होगी। अतः दोनों अल्पसेना से घिरे हुए गये थे। जब दोनों वनमार्ग से जा रहे थे, तब वायु ने दोनों की सेवा की। वह वायु शालवृक्ष के सम्पर्क जन्य गन्ध से युक्त पुष्परेणु

को फैलाने वाला जंगलस्थ वृक्षों को हिला रहा था। मयूर रथ ध्वनि को सुनकर मुख को ऊपर कर रहे थे। रथ ध्वनि को मेघध्वनि मानकर वे मयूर षड्ज स्वर से केका ध्वनि कर रहे थे। उस केका ध्वनि को सुन-सुन कर वह दम्पति वसिष्ठाश्रम गये। जब रथ वनमार्ग से जा रहा था, तब मार्गस्थ मृग समीप आने पर मार्ग छोड़ते थे। उन मृगद्वन्द्वों में उस दम्पती ने परस्पर नेत्रसादृश्य को देखा। आकाश में सारस पंक्तिबद्ध होकर स्तम्भरहित तोरणमाला का निर्माण किया। उस तोरण माला को उस दम्पति ने देखा। जिस दिशा में रथ जा रहा था उसी दिशा में वायु प्रवाहित हो रही थी। इस प्रकार अनुकूल पवन से उनका मनोरथ अवश्य सफल होगा, इसकी सूचना दे रहा था। रथवाहक अश्वों के खुरों से उडाई गई धूलि उनको स्पर्श नहीं कर रही थी। सरोवर में उत्पन्न कमलों की परिमल तरंग संचालन से शीतल थी। उसी के समान प्रसन्न सुदक्षिणा और दिलीप के नि:श्वास अनुकूल थे। इस कारण उनके नि:श्वास अरविन्द से भी परिमलभरित थे। उसके बाद दोनों ने दिलीप द्वारा प्रदान किये गये यूपचिन्ह युक्त गांवो में प्रवेश किया। वहाँ याज्ञिकों के सफल आशीर्वाद को ग्रहण किया। आभीरपल्ली में शोषवृद्धजन ताजा मक्खन (हेयंगवीन) को लेकर उपस्थित हुए। उन्हीं से वनमार्ग के वृक्षों के नाम को पूछे। चैत्र मास की पूर्णिमा में चित्रा नक्षत्र और चन्द्रमा संयुक्त होते हैं। तब उनके योग में वैसे शोभा होती है। जैसे शोभा सुदक्षिणा और दिलीप के योग में हो रही थी। गमनकाल में दिलीप ने मार्ग के दृश्यों को पत्नी सुदक्षिणा को दिखाया। ऐसा करते हुए दिलीप को मार्ग का भी ज्ञान नहीं रहा। अन्त में सांयकाल में सुदक्षिणा और दिलीप जब महर्षि वसिष्ठ के आश्रम में पहुंचे तब रथवाहक अश्व भी थक गये थे।

आपने क्या सीखा

- दिलीप और सुदक्षिणा का वसिष्ठाश्रम गमन जाना।
- कालिदास की विशेष वर्णन शैली को जाना।

पाठान्त प्रश्न-7.15

1. संक्षेप में पाठ के सार का वर्णन कीजिए।
2. कवि ने एक रथ पर समारुढ़ सुदक्षिणा और दिलीप को कैसे वर्णित किया।
3. कवि ने प्रकृति वर्णन में पवन का कैसे वर्णन किया।
4. मयूरों के विषय में कवि ने क्या कहा।
5. ''परस्पराक्षसासादृश्यम्''-इत्यादि श्लोक का वर्णन कीजिए।
6. आमोद: ने उन दोनों के नि:श्वास का अनुकरण किया इस कथन से कवि क्या प्रतिपादित करने की इच्छा करते हैं।
7. दिलीप प्रदत्त गांव कैसे थे, सविस्तार वर्णन कीजिए।

टिप्पणी

8. सुदक्षिणा और दिलीप के वशिष्ठाश्रम गमन का वर्णन कीजिए।

9. स्तम्भों में लिखित पदों का मेल कीजिए।

	स्तम्भ-क		स्तम्भ-ख
1.	बुबुधे	1.	सुदक्षिणा दिलीपौ
2.	सुखस्पर्शैः	2.	केकाः
3.	मार्गशाखिनाम्	3.	मृगद्वन्द्वम्
4.	षड्जसंवादिनीः	4.	पवनैः
5.	शोभा	5.	अवगतवान्
6.	महर्षिः	6.	वन्यानाम्
7.	परस्पराक्षिसाद्रश्यम्	7.	अभिख्या
8.	चित्राचन्द्रमसौ	8.	वशिष्ठः

उत्तर 1-5, 2-4, 3-6, 4-2, 5-7, 6-8, 7-3, 8-1

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

7.1

1. वे दोनों पुत्रकामना से वशिष्ठाश्रम गये।
2. जाया च पतिः च- दम्पती। एकशेष समासः। नित्य द्विवचानन्त रुप
3. वसिष्ठ दिलीप के कुलगुरु थे।
4. 4
5. 1

7.2

6. दिलीप का रथ स्निग्ध गम्भीर ध्वनि वाला था।
7. सुदक्षिणा और दिलीप विद्युत एवं ऐरावत से उपमित हैं।
8. प्रावृषि भवः प्रावृषेण्यः, तं प्रावृषेण्यम्। द्वितीया कवचन, वर्षा हुई अर्थ।
9. 2

टिप्पणी

7.3

10. सुदक्षिणा और दिलीप अनुभाव विशेष से अल्प सेना से घिरे थे।

11. मा भूत का मूलरुप-मा अभूत् है। यहां ''माङ्योगात् न माङ्योगे'' इस सूत्र से अट् का आगम नहीं होता। नहीं हो यह अर्थ है।

12. आश्रम में पीड़ा न हो इसलिए वे दोनों अल्पसेवा वाले थे।

7.4

13. सुखस्पर्श, शालवृक्ष से निकली गन्ध, पुष्परेणु उत्किर्ण गन्धवाले पवन द्वारा उन दोनों की सेवा की गई।

14. शालस्य निर्यासः शाल निर्यासः पष्ठीतत्पुरुषसमास। शालनिर्यासस्य गन्धः शालनिर्यासगन्ध : षष्ठी तत्पुरुष समास। शालानिर्यासगन्धः अस्ति येषां ते शालनिर्यासगन्धिनः, तैः शालनिर्यासगान्धिभिः।

15. पुष्परेणूत्किरैः+वातैः+आधूतवनराजिभिः।

16. 3

17. 1

18. मयूर षड्ज स्वर से गाते थे।

7.5

19. मयूरों ने रथ चक्र जन्य शब्द को सुनकर मुख को ऊपर किया।

20. रथस्य नमेयः रथनेमयः-पष्ठीतत्पुरुपसमास। रथनेमीनांस्वनाः रथनेमिस्वनाः-पष्ठीतत्पुरुष समास। ऊर्ध्व मुखं येषां ते उन्मुखाः- बहुव्रीहि समास। रथनेमिस्वनैः उन्मुखाः रथनेमिस्वनोन्मुखाः इति तृतीयातत्पुरुष समासः, तैः रथनेमिस्वनोन्मुखैः।

21. 1

22. 2

7.6

23. मृग रथ के समीप आने पर मार्ग छोड़ते थे।

24. वे दोनों परस्पर नेत्रसादृश्य को मृगद्वन्द्वों में देख रहे थे।

25. न दूरम् अदूरम्-नञ्तत्पुरुप समास। उज्झितं वर्त्म यैः तानि उज्झितवर्त्मानि-बहुव्रीहिसमास, अदूरं यथा तथा उज्झितवर्त्मानि अदूरोज्झितवर्त्मानि-सुप्सुपासमास, तेषु अदूरोज्झि तवर्त्मसु।

26. 3

टिप्पणी

7.7

27. सारसो ने पंक्ति बद्ध होकर तोरणमाला बनाई।

28. तोरणमाला स्तम्भरहित थी।

29. उद् उपसर्ग, नम् धतु से णिचि में क्त प्रत्यय से उन्नतितम् रुप बना। उन्नतितम् आननं ययो: तौ उन्नमिताननौ- बहुव्रीहिसमास।

7.8

30. पवन अनुकूल थी।

31. पवन द्वारा मनोरथ साफल्य की सूचना और तुरग उत्कीर्ण धूलि को फैलना, ये दोनों कार्य किए गये।

32. रजोभि:+तुरगोत्कीर्णै:+अस्पृष्टालकवेष्टनौ।

7.9

33. अरविन्दों के परिमल तरंग संचालन से शीतल हुई।

34. आमोद ने सुदक्षिणा और दिलीप के नि:श्वास को अनुकूल किया।

35. दम्पति के नि:श्वास अरविन्द से भी परिमल भरित हैं।

7.10

36. दिलीप द्वारा याज्ञिक ब्राह्मणों को ग्राम दिये गये थे।

37. यज्ञिकों के आशीर्वाद अमोघ थे।

38. प्रतिगृह्णतौ+अध्हर्यानुपदम्+आशिष:

7.11

39. कल गो दोहन से जो दुग्ध उत्पन्न हुआ, उस दुग्ध से निर्मित धृत को 'हैयंगवीन' कहते हैं।

40. उन दोनों को मार्गवृक्षों के नाम घोषवृद्धों ने बताये।

41. वृद्धजन हैयंगवीन लेकर उपस्थित हुए।

42. 4

7.12

43. चित्रा और चन्द्रमा का योग चैत्रमास की पूर्णिमा में होता है।

44. अभिख्या का अर्थ शोभा है।

45. यहां सुदक्षिणा और दिलीप चित्रा और चन्द्रमा से उपमित है।

46. 1

47. 3

7.13

48. दिलीप पत्नी सुदक्षिणा को मार्ग के दृश्यों को दिखाते हुए, मार्ग कटने का ज्ञान नहीं था।

49. बुध् धतु-लिट लकार प्रथम पुरुष, एकवचन-

50. 3

7.14

51. दिलीप सायं काल में वाशिष्ठाश्रम में पहुँचे।

52. महिष्याः सखा महिषीसखाः- षष्ठीतत्पुरुषमास।

सन्दर्भगन्थ सूचि -

कालिदासः। रघुवंशम् (चन्द्रकलाख्याया-हिन्दी अनुवाद विभषित) रेश्मी आचार्य शेषराज शर्मा (व्याख्याकारः) 2009। चोखम्बा-सुरभारती प्रकाशन-वाराणसी

कालिदास। रघुवशम्। बन्द्योपाध्याय-उदयचन्द्रः, बन्द्योपाधयाय-अनिता (व्याख्याकार) 2003। संस्कृत-बुक डिपो। कालिकावा।